PHILOSOPHY

B.A. (Hons.), Paper III (Part II)

Analysis of Voluntary action

(ऐच्छिक कर्म का विश्लेषण)

Dr. S.K. Singh
Mob.—
9431449951

→ ऐच्छिक कर्म विवेकशील व्यक्ति का ~~किसी~~ स्वेच्छापूर्वक किया गया कर्म है। इस कर्म का मनोवैज्ञानिक आधार होता है जो वाह्य-रूप में क्रिया के रूप में फलित होता है।

→ जब कोई विवेकशील व्यक्ति स्वतंत्र रूप से संकल्प का कोई ऐसा कर्म करता है, जिसके साधन और हेतु का उसे पूर्व ज्ञान हो तब उस क्रिया को 'ऐच्छिक कर्म' कहा जाता है।

→ यहाँ सबसे पहली बात तो यह है कि मनुष्य जब भी अपनी इच्छा से कोई कर्म करता है तो कोई न कोई जरूरत से। वह किसी-न-किसी अभाव का अनुभव करता है और उसी की पूर्ति की इच्छा से कर्म करता है। यदि कोई ~~दुविधा होती है~~ द्विविधा होती है तो उसपर सोच-विचार का इच्छित पदार्थ को पाने का साधन विचारता है और अन्त में विचारे हुये साधन से उस पदार्थ को पाने का संकल्प करता है। यह स्थिति उसके मानसिक क्रिया की स्थिति है।

उदाहरणार्थ - किसी विद्यार्थी को वर्ग में पढ़ाई होते वक्त असह्य प्यास लगी है तो उसे पानी पीने का विचार आता है, वह वर्ग से जाये या न जाये इस तरह की द्विविधा होती है और अन्त में सोच-विचार कर आता लेकर पानी पी आने का वह विद्यार्थी संकल्प लेता है। यह सब उस विद्यार्थी का मानसिक कर्म के पूर्व का मानसिक व्यापार है जिसका प्रत्यक्ष नहीं होता।

→ अपने उक्त मानसिक व्यापार के उपरांत ~~कोई~~ व्यक्ति अपने अभिप्राय (motive) की पूर्ति के लिये शारीरिक चेष्टा (Bodily effort) करता है प्रारंभ करता है जिसका प्रत्यक्ष दूसरों को होता है। उदाहरणार्थ - उक्त उदाहरण में आगे वह विद्यार्थी अपने मानसिक निर्णय के अनुसार शारीरिक उपक्रम करता है और आता

Scanned with CamScanner

लेकर वर्ग से बाहर जाता है, ~~अपनी प्यास बुझाता~~ और एवं पानी पीता है; यही उसकी शारीरिक चेष्टा है।

→ अंत में चेष्टाओं के समाप्त होने पर उसे फल उस कर्म का फल होता है। वह विद्यार्थी पानी पीकर अपनी प्यास बुझाता है। जब वह पानी पी लेता है तो उसे संतोष होता है।

⇒ इस प्रकार किसी ऐच्छिक कर्म में अभाव, अभिप्राय (motive), साधन का विचार, मानसिक द्वन्द्व, निश्चय आदि मन में होते हैं, चेष्टा शरीर के द्वारा होती है और उस क्रिया के होने पर बाह्य फल होता है।

उक्त उदाहरण में प्यास का लगना (प्यास) अभाव की स्थिति है, पुनः प्यास बुझाने का विचार अभिप्राय है जो उसे क्रिया के लिये प्रेरित करता है, इसके उपरांत वर्ग से जाना या न जाना, आज्ञा लेना अथवा आज्ञा न लेना (यूं ही चला जाना), कहाँ जाना आदि का द्वन्द्व होता है तत्पश्चात ~~व्यक्ति यह कि~~ विद्यार्थी यह निश्चित करता है कि आज्ञा लेकर पानी के किस स्थान पर उसे जाना है। इस मानसिक व्यापार के उपरांत उस विद्यार्थी का शारीरिक चेष्टा होता है और वह अपने निश्चय के अनुरूप शारीरिक क्रिया करता है और उस क्रिया के हो जाने पर उसका बाह्य फल ~~फल~~ (external consequence) होता है, उसकी प्यास बुझती है।

→ नीतिशास्त्र आचरण का विज्ञान (Science of conduct) है, एक विवेकशील व्यक्ति के ऐसे आचरण का विज्ञान जो आचरण उसका ऐच्छिक है अर्थात उसके ऐच्छिक कर्म का ही नीतिशास्त्र का प्रतिपाद्य विषय है। व्यक्ति का आदर्श आचरण क्या है- यह भी नीतिशास्त्र का विषय है जिसके आधार पर किसी के ऐच्छिक कर्म का मूल्यांकन किया जाता है।

→ ऐच्छिक कर्म नैतिकता का एक महत्वपूर्ण अभ्युपगम है, नैतिकता की पूर्वमान्यता में से एक महत्वपूर्ण मान्यता है।

Scanned with CamScanner